पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.12.2013 इस अंक का मूल्य *2* रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
के तत्वावधान में
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
सोमवार, 23 दिसम्बर 2013,
प्रात: 10 बजे
मुख्यमंत्री निवास, 3,
मोतीलाल नेहरू पैलेस, नई दिल्ली
आप सादर आमन्त्रित हैं
-डा.अनिल आर्य,संयोजक

वर्ष-30 अंक-14 पौष-2070 दयानन्दाब्द 190 16 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2013 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.12.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

परिषद् की राजस्थान प्रान्तीय कार्यकर्ता बैठक बहरोड़ में सम्पन्न

समलैगिंकता गैर कानूनी : सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का स्वागत **-डा.अनिल आर्य**

रविवार, 15 दिसम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान की प्रान्तीय कार्यकर्ता बैठक कंचन वाटिका, बहरोड़ में श्री यशपाल 'यश' (प्रदेश अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राजस्थान) की अध्यक्षता में सौल्लास सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य ने कहा कि परिषद् चरित्रवान युवा पीढ़ी को तैयार करने का अभियान जारी रखेगी, उन्होंने साम्प्रदायिक हिंसा विरोधी अधिनियम को देश को बांटने वाला बताया कि यह राष्ट्र हित में नहीं है, डा. आर्य ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का स्वागत करते हुए समलैगिकता को सदाचार व नैतिकता के विरूद्ध बताया। बैठक का कुशल संचालन परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रामकृष्ण शास्त्री ने किया। श्री महेन्द्र भाई, श्री यशोवीर आर्य, श्री रामकुमार सिंह, श्री सुरेश आर्य, श्री जगमाल सिंह, श्री रामानन्द आर्य, श्री विष्णु आर्य, श्री शिशुपाल आर्य आदि ने अपने विचार रखे। श्री धर्मपाल आर्य, श्री दिनेश सिंह, श्री अनिल हाण्डा, श्री राकेश आर्य, श्री उमेद सिंह उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय बैठक गाजियाबाद व हरियाणा प्रान्तीय बैठक करनाल में सम्पन्न

रविवार 8 दिसम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश की प्रान्तीय कार्यकर्ता बैठक आर्य समाज, राजनगर, गाजियाबाद में श्री श्रद्धानन्द शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के आह्वान पर सभी ने आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने का आश्वासन दिया। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री आनन्द प्रकाश आर्य व महामंत्री श्री प्रवीन आर्य ने संचालन किया। श्री सत्यवीर चौधरी, श्री महेन्द्र भाई, श्री प्रमोद चौधरी, श्री सुरेश आर्य, डा.आर.के.आर्य, श्री ज्ञानेन्द्र आर्य, श्री तेजपाल आर्य, श्रीपाल आर्य आदि ने अपने विचार रखे। द्वितीय चित्र में शनिवार 14 दिसम्बर 2013, करनाल बैठक को सम्बोधित करते डा.अनिल आर्य, साथ में श्री राजेश्वर मुनि, श्री प्रज्ञान मुनि, स्वामी सच्चिदानन्द जी, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री मनोहरलाल चावला, श्री शान्तिप्रकाश आर्य, केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सत्येन्द्रमोहन कुमार, मंत्री श्री भोपाल सिंह आर्य, बहन सावित्री आर्या व अर्चना पुष्करना। श्री रणसिंह राणा, श्री हरिचन्द स्नेही, श्री शमशेर आर्य, श्री भलेराम आर्य, श्री हरेन्द्र चौधरी, श्री अजय आर्य, श्री सूरज गुलाटी, श्री रोशन आर्य आदि ने अपने विचार रखे। संचालन श्री स्वतंत्र कुकरेजा ने किया।

जम्मू-कश्मीर में लगाया केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने स्वास्थ्य जांच शिविर

शनिवार, 30 नवम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू-कश्मीर के तत्वावधान में आर्य समाज, जानीपुर कालोनी में डा.जगदीश के नेतृत्व में स्वास्थ्य जांच शिविर का रचनात्मक आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ो लोगों ने लाभ उठाया। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुभाष बब्बर, महामंत्री श्री रमेश खजुरिया, श्री अरूण आर्य बधाई के पात्र हैं।

विशाल कार्यकर्ता बैठक 5 जनवरी को होगी

251 कुण्डीय विराट यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी हेतु ''विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक'' रविवार, 5 जनवरी 2014 को प्रात: 11 बजे, श्री कृष्ण गोपाल दीवान की अध्यक्षता में आर्य समाज, दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली-110006 में होगी। कृपया साथियों सहित समय पर पहुंचे।

-डा.अनिल आर्य, संयोजक

'महर्षि दयानन्द के आदर्श भक्त महामानव हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द'

– मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द, पूर्व नाम महात्मा मुंशीराम, महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य थे। आपने महर्षि दयानन्द के बाद अपनी ज्ञानोपार्जित प्रतिभा व कार्यो से समाज, देश व विश्व को प्रभावित किया। वह अनेक ऐसे कार्य कर गये हैं जिनसे आर्य समाज सहित सारा विश्व समाज प्रेरणा ग्रहण कर उसका अनुकरण व अनुसरण कर सकते हैं। वह एकदेशीय महापुरूष न होकर विश्व पुरूष थे जिसका उदाहरण उनके अनेक कार्य हैं। गुरूकुल की स्थापना, उसका संचालन तथा उसको बुलन्दियों तक पहुंचाना उनका ऐसा कार्य है कि जिससे वह महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को सफलतापूर्वक साकार करने के लिए आर्य समाज सहित सारी दुनियां के लिए आदर्श हैं। आज सारी दुनिया में जो शिक्षा पद्धति है उसका यदि सूक्ष्म निरीक्षण करें तो पाते हैं कि शिक्षा व संस्कार वस्तुतः माता-पिता व आचार्यो से ही पड़ते हैं। माता-पिता का सन्तान के निर्माण में गौण स्थान होता है परन्तु आचार्य का प्रमुख स्थान होता है। गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली में आचार्य बालक को, माता के अपने बच्चे को गर्भ मे रखने के समान, उपनयन व वेदारम्भ संस्कार से आरम्भ कर स्नातक बनने तक अपने गुरूकुलरूपी गर्भ में रखता है। उसका अपने शिष्य ब्रह्मचारी की प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान रहता है और उसमें वह जिस किसी भी प्रकार की त्रुटि व कमी देखता है, उसे दूर करने के लिए अपने ज्ञान, विवेक, आचरण, प्रेम-वात्सल्य व ताड़ना द्वारा उसका सुधार करता है। राम व कृष्ण के उदाहरण हमारे सामने हैं। इनके गुरूओं ने ही इन्हें इनके सम्मानित स्थान तक पहुंचाया था। चाणक्य का उदाहरण भी हमारे सामने हैं जिन्होने अपने शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य का इसी प्रकार निर्माण किया और इतिहास को नई दिशा दी। महर्षि दयानन्द का उदाहरण भी हमें विदित है जो कुछ प्रश्न व शंकायें लेकर घर छोड़कर निकले थे और उनकी पूर्ण तृप्ति मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में विद्या अर्जन से पूरी हुई। महर्षि दयानन्द व गुरू विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य ने इस देश में ही नहीं अपितु सारे विश्व में एक आध्यात्मिक व सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया और सदियों से जो लोग सच्चे ईश्वर की उपासना से प्राप्त होने वाले अमृत-मुक्ति-मोक्ष के पान से वंचित होकर अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहे थे, उन्हें संजीवनी प्रदान कर मानव जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य का बोध कराया व उसकी प्राप्ती का मार्ग प्रशस्त किया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल की स्थापना का निर्णय व संकल्प क्यों लिया?इसके जहां अनेक कारण रहे होंगे वहां हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द की दीपावली 30 अक्तूबर, सन् 1883 को मृत्यु के बाद उनका ऐसा स्मारक बनाने का विचार उनमें आया कि जिससे वह एक सजीव स्मारक भी बने और उससे उनका किया गया अधूरा कार्य भी पूरा हो सके। वह स्मारक उनकी विचारधारा के अनुरूप शिक्षा का संस्थान गुरूकुल ही हो सकता था। यहां समस्या यह भी आयी होगी कि इसके लिए प्रभूत धन, भूमि, समर्पित विद्वान आचार्यो के साथ कुछ ब्रह्मचारी जिनके माता पिता गुरूकुल में अध्ययन कराने के लिए उन्हें सौंप दें और साथ ही एक समर्पित योग्य व पात्र व्याक्ति का पूरा जीवन या समय चाहिए था जो गुरूकुल की स्थापना, भवन निर्माण व सभी आवश्यक प्रबन्ध कर सके। गुरूकुल स्थापना के पीछे यह भी कारण थे कि उन दिनों शिक्षा के लिए अंग्रेजों के शिक्षणालय, स्कूल व संस्थायें होती थीं जहां गुप्त व प्रत्यक्ष रूप से बच्चों पर ईसाईयत के संस्कार डाले जाते थे। लार्ड मैकाले ने जो शिक्षा पद्धति तैयार की थी वह भारतीयों को ईसाईयत के संस्कारों में रंगकर उन्हें उनके भारतीय वैदिक धर्म व संस्कृति से दूर करने का प्रयास ही था। प्रमुख कारण एक यह भी रहा कि स्वामी दयानन्द की स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज का जो स्वरूप बना उसमें वेद व संस्कृत को स्थान नहीं मिला तथा कुछ ने कहा कि इनका अध्यापन समय के अनुरूप न होगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुत्री एक सरकारी संस्था द्वारा संचालित स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन स्कूल से घर लौटने पर वह 'एक बार ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।।' कविता को बार-बार गा-कर स्मरण कर रही थी। पूछने पर उसने बताया कि स्कूल में उन्हें वह कविता सुनाई गई और उसे याद करने के लिए कहा गया। यह पंक्तियां जिस किसी ने भी लिखी होगीं, और स्कूल में बच्चों को याद कराई गईं इससे कविता के लेखक, स्कूल प्रशासन व सरकार की मंशा साफ जाहिर होती है। स्वामी श्रद्धानन्द इसे सुनकर बेचैन हो गये और भारत के भविष्य के बारे में सोचने लगे। तब उन्हें लगा कि हमारी अपनी शिक्षा प्रणाली व विद्यालय होने चाहिये और तभी हम अपनी धर्म व संस्कृति बचा सकेगें, अन्यथा नहीं। यह घटना यद्यपि छोटी है परन्तु इसने स्वामी श्रद्धानन्द को गहराई से प्रभावित किया था। इन सब कारणों से, स्वामी श्रद्धानन्द के अकथनीय प्रयासों व तप से 2 मार्च सन् 1902 ई. को गुरूकुल की स्थापना हरिद्वार के पास कांगड़ी ग्राम में हुई। हम अनुभव करते हैं कि वह दिन भारत के सौभाग्योदय का प्रमुख दिन था। इस गुरूकुल से जो स्नातक निकलने वाले थे वह संसार मे फैले अन्धकार को चुनौती देने वाले थे जिससे मत-मतान्तरों के कृत्रिम बादल रूपी आवरण से ढके हुए सत्य 'वेद-धर्म' के भानु को उदय होना था।

गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना क्यों की गई?इसका एक कारण डी.ए.वी. कालेज का अपने मूल उद्देश्य से भटक जाना था। डी.ए.वी. कालेज जिस रूप में स्थापित हुआ और चला उससे स्पष्ट हो गया कि वहां संस्कृत व वेद आदि साहित्य का अध्ययन जैसा ऋषि दयानन्द को अभीष्ट था, वहां के कर्ता-धर्ता लाला मूलराज व उनके अनुगामी कराना नहीं चाहते थे। अतः गुरूकुल की स्थापना का उद्देश्य सामान्य शिक्षा के साथ मुख्यतः सत्य ज्ञान वेदों के अध्ययन, अध्यापन, संरक्षण, अनुसंधान व उसका प्रचार एवं प्रसार था। महर्षि दयानन्द ने अपने लघु ग्रन्थ 'भ्रान्ति निवारण' में लिखा है कि ''परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिला कि वेदभाय पूर्ण हो जाये तो निःसन्देह आर्यावर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा कि जिसको मेटने और झापने को किसी का सामर्थ्य न होगा क्योंकि सत्य का मूल ऐसा नहीं है कि जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके, और भानु के समान ग्रहण में भी आ जावे तो थोड़े ही काल में फिर उग्रह अर्थात् निर्मल हो जायेगा।'' महर्षि दयानन्द वेदों के भाष्य का कार्य पूर्ण नहीं कर सके थे। 30 अक्तूबर सन् 1883 को मृत्यु तक वह यजुर्वेद का भाष्य पूर्ण कर चुके थे। ऋग्वेद के 7वें मण्डल के 61वें सूक्त के 2सरे मन्त्र तक का भाष्य हो चुका था। शेष मन्त्रों का भाष्य किया जाना था। इसके अतिरिक्त अथर्ववेद व सामवेद का भाष्य भी अभी होना था। महर्षि दयानन्द के बाद वेदभाष्य के अवशिष्ट कार्य को पूरा करने की योग्यता उन दिनों किसी में नहीं थी। कुछ योग्यता पं. गुरूदत्त विद्यार्थी में थी जो यदि प्रयास करते तो भावी जीवन में कर सकते थे। परन्तु पं. गुरूदत्त अनेकानेक कार्यो में इतने व्यस्त थे कि यह कार्य उनके द्वारा होना सम्भावित नहीं था। सन् 1990 में 26 वर्ष की अल्पायु में उनकी मृत्यु के कारण वह सम्भावना भी समाप्त हो गई। गुरूकुल कांगड़ी ने सबसे बड़ा कार्य जहां वेद, वैदिक साहित्य व संस्कृत के अध्ययन द्वारा वेद-विद्या के क्षेत्र में अज्ञान का नाश किया वहां अनेकानेक वैदिक विद्वान आर्य समाज को दिये जिन्होंने वैदिक शिक्षा का महत्व दिग-दिगन्त फैलाया। जिन विद्वानों ने वेदभाष्य के कार्य को पूरा किया उनमें गुरूकुल कांगड़ी का विशेष योगदान है जिसका श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द व उनके द्वारा स्थापित गुरूकुल-कांगड़ी को है। महर्षि दयानन्द ने वेदभाष्य के कार्य के पूर्ण हो जाने पर आर्यावर्त में सूर्य का सा प्रकाश होने का जो अनुमान, सम्भावना या विचार व्यक्त किया था, हमें लगता है कि वह एक प्रकार से पूर्ण हो गया है परन्तु किन्हीं स्वार्थों, आलस्य व प्रमाद के कारण संसार के लोग उसे मानने को तैयार नहीं हैं। कुछ कमियां आर्य समाज के संगठन में भी हैं जिससे जितना वेद प्रचार का कार्य करना था वह हो नहीं पा रहा है। महर्षि दयानन्द ने वेद के आधार पर ईश्वर, जीव व प्रकृति का जो सिद्धान्त प्रमाण-पुरस्सर प्रस्तुत किया था, आज वह सर्वत्र प्रतिष्ठित है। किसी मत-मतान्तर में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह उसे अस्वीकार करे। अतः सब चुप हैं एवं अपनी अविद्या एवं स्वार्थ आदि कारणों से उसे स्वीकार नहीं कर पा रहे है। अब केवल प्रचार के द्वारा उसे सर्वत्र मान्यता प्रदान कराने की है। प्रकारान्तर से आर्य समाज की वेद सम्बन्धी मान्यताओं को सभी मत-मतान्तरों की मौन स्वीकृति भी मिली हुई है परन्तु मत-मतान्तरों के लोगों का स्वार्थ ही उसे स्वीकार करने में बाधक है जिसमें हमारे पौराणिक वा कथित सनातन धर्मी बन्धु भी सम्मिलित हैं। गुरूकुल के जिन विद्वानों ने वेद भाष्य के कार्य को सम्पन्न किया उनमें प्रमुख स्थान पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय, पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, डा. रामनाथ वेदालंकार, पं. सत्यकाम विद्यालंकार आदि का है। गुरूकुल की लोकप्रियता और सफलता का यह भी एक उदाहरण है कि 21 अक्तूबर सन् 1916 को वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड गुरूकुल पधारे। महात्मा मुंशीराम जी ने उनका स्वागत किया। पं. इन्द्र रचित 'मेरे पिता' पुस्तक में इस घटना का विस्तृत विवरण है जो पढ़ने योग्य है। इससे गुरूकुल की ख्याति में चार चांद लगे। सन् 1913 में लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन भी गुरूकुल पधारे थे और महात्मा मुंशीराम जी से प्रभावित हुए। उन्होंने अपने संस्करण में कहा है कि 'एक मिनिट भी उनके साथ रहते हुये उनके भावों की सत्यता और उनके उद्देश्यों की उच्चता को अनुभव न करना असम्भव है। दुभार्ग्यवश हम सब मुंशीराम नहीं हो सकते हैं।' रैम्जे मैकडानल्ड, जो बाद में ब्रिटेन के प्रधान मंत्री बने, भी गुरूकुल पधारे थे। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है कि 'वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिये कोई जीवित माडल लेना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर के चित्र के लिये नमूना मांगें, तो भी मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूगां।'

स्वामी श्रद्धानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश से प्रभावित होकर सन् 1884 के माघ महीने में आर्य समाज का सदस्य बनने का निर्णय किया था। आप सन् 1886 में आर्यसमाज जालन्धर के प्रधान बने। लगभग 4 वर्ष बाद सन् 1892 में आप आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान निर्वाचित हुए। गुरूकुल के स्वप्न को साकार करने के लिए आप अगस्त, 1898 में 30,000 रूपये एकत्र करने का संकल्प लेकर घर से निकले थे। आपका यह संकल्प 8 अप्रैल 1900 ई. को पूरा हुआ। आपने रूपये 30,000 हजार के स्थान पर रूपये 40,000 एकत्र कर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया। अब भूमि वा स्थान का चयन एवं उसे प्राप्त किया जाना था। इसके लिए महात्मा मुंशीराम का विचार था कि नदियों क संगम और पर्वतों की उपत्यकायें जहां हों, वहां गुरूकुल स्थापित हो। उनकी दृष्टि में ऐसा स्थान हिमालय के दामन में गंगा का तट हो सकता था। उनका स्वप्न साकार हुआ। हरिद्वार के सामने गंगा के पूर्वी तट पर स्थित कांगड़ी गांव के एक जमींदार मुंशी अमनसिंह जी--जो बड़े त्यागी, धर्मपरायण और सत्यनिष्ठ थे--ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को यह सूचना दी कि उन्होंने गुरूकुल की स्थापना के लिये अपनी कुल सम्पत्ति (कांगड़ी गांव लगभग 1400 बीघे भूमि सहित) आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब को दान में देने का संकल्प किया है। इस प्रस्ताव को सभा ने स्वीकार किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने कांगड़ी गांव के जंगल के कुछ भाग को साफ करवाकर वहां गुरूकुल के लिए झोपड़ियां बनवा दीं। 2 मार्च सन् 1902 को इसी भूमि पर स्वामी दयानन्द के विचारों के अनुरूप महात्मा मुंशीराम के संकल्प व तप से सिंचित गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना हुई। स्थापना के एक वर्ष बाद 10 से 13 मार्च, 1903 तक गुरूकुल का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस गुरूकुल की सफलता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि 8 अप्रैल 1915 को महात्मा गांधी गुरूकुल पधारे और उनकी स्वामी श्रद्धानन्द से भेंट हुई। इस अवसर पर महात्मा मुंशीराम ने पहली बार गांधीजी को महात्मा गांधी के नाम से सम्बोधित किया। यह 'महात्मा' शब्द इसके बाद उनके नाम का अलंकार बन गया। स्वामी जी ने गुरूकुल कांगड़ी के अतिरिक्त कुछ अन्य गुरूकुलों व शिक्षण संस्थाओं की भी स्थापना की जिनमें कन्या विद्यालय, जालन्धर (स्थापना सन् 1890), गुरूकुल मुल्तान (13 फरवरी 1909), गुरूकुल कुरूक्षेत्र (अप्रैल 1912), गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ (सन् 1913), गुरूकुल मटिण्डू, रोहतक (सन् 1915), गुरूकुल रायकोट लुधियाना (सन् 1920), कन्या गुरूकुल, देहरादून जिसकी स्थापना दिल्ली में 8 नवम्बर 1923 को की थी तथा गुरूकुल सूपा (18 फरवरी 1924) आदि मुख्य हैं। गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना और उसके संचालन में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सर्वस्व समर्पित किया। पहले अपने दो पुत्रों हरिश व इन्द्र को उसमें प्रविष्ट कराया। आरम्भ में लगभग 30 ब्रह्मचारी गुरूकुल में प्रविष्ट हुए थे। समय-समय पर स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र की प्रेस, अपनी जालन्धर की बड़ी कोठी को भी गुरूकुल के कार्यो में उपयोग के लिए दान देकर समर्पित कर दी।

(शेष अगले अंक में)

॥ ओ३म् ॥

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 35वें वार्षिकोत्सव पर

सानिध्य : स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी

आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व व डॉ. अशोक कु. चौहान की अध्यक्षता में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2014 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली-34 (निकट कोहाट एनक्लेव मैट्रो स्टेशन)

आर्यो की शोभा यात्रा, शुक्रवार 24 जनवरी, 2014, प्रात: 10 बजे

शोभा यात्रा मार्ग :- रामलीला मैदान से चल कर वाया-बाहरी रिंग रोड, चित्रकूट अपार्टमेन्ट, आर्य समाज विशाखा एनक्लेव, गोपाल मन्दिर रोड, जी.डी.गोयन्का स्कूल, क्यू डी ब्लाक, डी.ए.वी.स्कूल, एन डी ब्लाक, मुनि मायाराम चौक, वैशाली, यू.यू.ब्लाक, पैट्रोल पम्प, टी यू ब्लाक, वी.पी ब्लाक,एम यू ब्लाक,एल यू ब्लाक, के. यू ब्लाक, श्री शिवशक्ति मन्दिर, जे यू ब्लाक,एच यू ब्लाक, महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, दुर्गा मन्दिर मार्केट, दिगम्बर मन्दिर, एफ 1 यू, गीता आश्रम होते हुए दोपहर 1.30 बजे रामलीला मैदान में समापन ।

संयोजक : सर्वश्री देवेन्द्र भगत, यज्ञवीर चौहान, सोहनलाल आर्य, शिशुपाल आर्य, सुरेश आर्य, संतोष शास्त्री, ओमबीर सिंह, गवेन्द शास्त्री, योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, प्रवीन आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, स्वतंत्र कुकरेजा, ब्र.दीक्षेन्द्र, जोगेन्द्र खट्टर, राजीव आर्य,महेन्द्र टांक

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री, प्रदीप तायल, जितेन्द्र नरुला, ओमप्रकाश नागिया

शुक्रवार 24 जनवरी, 2014

यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 9.30
विराट शोभा यात्रा	: प्रात: 10.00 से 1.30
गौ कथा व वेद सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.00
द्वारा आचार्य धूमसिंह शास्त्री	
भव्य संगीत संध्या	: रात्रि 7.00 से 9.30
द्वारा श्री नरेन्द्र आर्य ''सुमन''	

शनिवार 25 जनवरी, 2014

101 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	: प्रात: 10.45 बजे
राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: 11.00 से 2.00
आर्य महिला सम्मेलन	: 2.00 से 5.00
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	: 5.00 से 6.30
स्वामी दर्शनानन्द शताब्दी समारोह	: 7.00 से 9.30

रविवार 26 जनवरी, 2014

151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	: प्रात: 11.00 बजे
राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 2.30
शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन	: 2.45 से 5.30
कार्यकर्ता सम्मान समारोह	: 5.30 से 6.00
धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	: सांय 6.15 बजे

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

दानी महानुभावों की सेवा में अपील - इस महायज्ञ में उदारतापूर्वक तन-मन-धन से सहयोग दें। ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, घी, सब्जी, मसाले इत्यादि से सहयोग करें। कृपया समस्त धनराशि क्रॉस चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से मुख्य कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने का समय व अपनी संख्या के बारे में 12 जनवरी, 2014 तक सूचित करने की कृपा करें, जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु, आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 12 जनवरी तक आरक्षित करवा लें।

प्रात: से रात्रि तक निरन्तर 'ऋषि लंगर' का सुन्दर प्रबन्ध रहेगा

निवेदक

डा० अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामंत्री
दुर्गेश आर्य
राष्ट्रीय मंत्री
राकेश भटनागर
राष्ट्रीय मंत्री
धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

कृष्णचन्द पाहूजा
रामकुमार सिंह
सत्यभूषण आर्य
विश्वनाथ आर्य
यशोवीर आर्य
मनोहरलाल चावला
आनन्दप्रकाश आर्य
रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

आनन्द चौहान
रणसिंह राणा
अरूण बंसल
अविनाश बंसल
सुरेन्द्र गुप्ता
ओमप्रकाश गुप्ता
मुंशीराम सेठी
प्रि० अन्जु महरोत्रा
स्वागत अध्यक्ष

मायाप्रकाश त्यागी
प्रभात शेखर
रवि चड्डा
रामलुभाया महाजन
सत्यप्रकाश आर्य
ओम व प्रमोद सपरा
ब्रह्मप्रकाश मान
बी.बी.तायल
स्वागत समिति

रेखा गुप्ता (पार्षद)
के.एस.यादव
रंजन आनन्द
सुरेन्द्र कोहली
प्रेमपाल शास्त्री
गायत्री मीना
नवीन रहेजा
शशिभूषण मल्होत्रा
स्वागत समिति

आयोजक: सर्वश्री जितेन्द्र डावर,चत्तरसिंह नागर, व्रतपाल भगत, विमला ग्रोवर, सरोज भाटिया, सुरेन्द्र शास्त्री, प्रभा सेठी, अर्चना पुष्करणा,शीला ग्रोवर, कै.अशोक गुलाटी, रचना आहूजा, उर्मिला आर्या, सुमन नागपाल, सुदेश अरोड़ा, सुदर्शन खन्ना, गोबिन्दलाल नागपाल, राजेन्द्र लाम्बा, श्रद्धानन्द शर्मा, सुधांशु भल्ला, सतीश शर्मा, वी.एस.डागर, कृष्णा सपड़ा, अमीरचन्द रखेजा, डॉ.ओमप्रकाश मान, विजयारानी शर्मा, विजेन्द्र आनन्द, प्रकाशवीर बत्रा

आयोजक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी०)

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-7, दूरभाष : 9810117464, 9312406810, 9013137070

Email : aryayouth@gmail.com • Website : www.aryayuvakparishad.com

join - http://www.facebook.com/group/aryayouth • aryayouthgroup@yahoogroups.com

आर्य समाज शालीमार बाग व प्रशान्त विहार का उत्सव सौल्लास सम्पन्न

रविवार, 1 दिसम्बर 2013, आर्य समाज, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में डा.महेश विद्यालंकार के साथ डा.अनिल आर्य, श्री कुन्दनलाल मुंजाल, श्री महेन्द्र भाई, श्री सुधीर सचदेवा व श्री वेदप्रकाश मेहता। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली में डा. अनिल आर्य व श्री महेन्द्र भाई का स्वागत करते प्रधान श्री कृष्णचन्द पाहूजा, मंत्री श्री मनोहरलाल चुघ व श्री सोहनलाल मुखी। आचार्य उर्षबुद्ध जी की कथा व श्री सुरेन्द्रसिंह गुलशन के भजन हुए।

फरीदाबाद व गुड़गांव में आर्य कार्यकर्ता बैठक सौल्लास सम्पन्न

रविवार 8 दिसम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद की कार्यकर्ता बैठक आर्य समाज, सैक्टर-19, फरीदाबाद में श्रीमती विमला ग्रोवर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य के आह्वान पर सभी ने आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने का आश्वासन दिया। श्री लक्ष्मीचन्द आर्य, श्री महेश गुप्ता, श्री वीरेन्द्र योगाचार्य, श्री गजराज आर्य, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री पी.के.मितल, श्री सत्यप्रकाश भारद्वाज, श्री सतपाल रहेजा आदि ने अपने विचार रखे। श्री सत्यभूषण आर्य ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र में रविवार, 15 दिसम्बर 2013 को गुड़गांव आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सोमनाथ आर्य का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, साथ में महांमत्री श्री प्रभुदयाल चुटानी, श्री भारत भूषण आर्य, श्री चन्द्रपकाश गुप्ता, श्री सुरेश आर्य आदि। सभी ने सम्मेलन में दल बल सहित पहुंचने का विश्वास दिलाया।

जन्तर मन्तर पर प्रदर्शन व मध्य दिल्ली की बैठक देव नगर में सम्पन्न

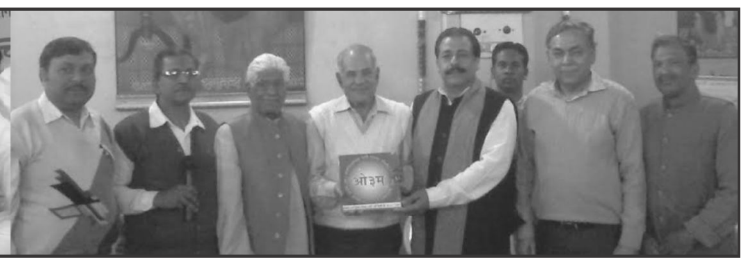

शुक्रवार, 6 दिसम्बर 2013, राष्ट्रवादी शिव सेना के अध्यक्ष श्री जयभगवान गोयल के नेतृत्व में जन्तर मन्तर पर ''साम्प्रदायिक हिंसा विधेयक'' के विरोध में प्रदर्शन किया गया। डा.अनिल आर्य, श्री रामकुमार सिंह, श्री महेन्द्र भाई, श्री भारतेन्दु, श्री अनिल हाण्डा भी सम्मिलित हुए। द्वितीय चित्र रविवार, 8 दिसम्बर 2013 को आर्य समाज, देव नगर में मध्य दिल्ली की बैठक में श्री नफेसिंह देसवाल का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, श्री विजय कपूर, श्री धूमकेतु शास्त्री, श्री भूदेव आर्य, श्री दिनेश आर्य। श्री गोपाल जैन ने संचालन किया। श्री राकेश आर्य, श्री गौरव आर्य, श्रीमती अनिता कुमार आदि भी उपस्थित रहे।

आर्य समाज, कालका जी का उत्सव व रोहिणी में सम्मेलन तैयारी बैठक सम्पन्न

रविवार, 1 दिसम्बर 2013, आर्य समाज, कालकाजी, नई दिल्ली का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। मंच पर आचार्य अखिलेश्वर जी कथा करते हुए, साथ में डा.अनिल आर्य। मंत्री श्री रमेश गाडी ने संचालन किया व प्रधान श्री रामचन्द कपूर ने आभार व्यक्त किया।द्वितीय चित्र में शनिवार, 14 दिसम्बर 2013 को आर्य समाज, रोहिणी, सैक्टर-7, दिल्ली में आयोजित बैठक में श्रीमती शान्ति रस्तोगी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, साथ में प्रधान श्री शिवकुमार गुप्ता, श्री कृष्णचन्द पाहुजा, श्री राजीव आर्य, श्रीमती शिखा अरोड़ा, श्रीमती उर्मिला आर्या, श्री सुरेश आर्य, श्री धर्मेन्द्र कपूर,श्री सन्तोष शास्त्री।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. आचार्य बुद्धदेव जी (डा. हरवीर शास्त्री) साधु आश्रम, अलीगढ़ की गोली मार कर हत्या कर दी गई।
2. श्री रामप्रकाश भार्गव, हरिनगर, दिल्ली का गत 4 दिसम्बर 2013 को निधन हो गया।
3. श्री गोबिन्द कठपालिया (करनाल) का गत 13 दिसम्बर 2013 को सड़क दुर्घटना मे निधन हो गया।

युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970